International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

लोकगीतों की सांस्कृतिक विरासत और संरक्षण के आधुनिक दृष्टिकोण

Akat Rohan Vilasrao

Research Scholar, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore

Dr. Rajendra Baviskar

Supervisor, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore

संक्षेप

हिंदी लोकगीत भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्त्वपूर्ण आधार हैं, जो समाज के ऐतिहासिक अनुभवों, भावनात्मक अभिव्यक्तियों और सामुदायिक जीवन के विविध रंगों को संरक्षित करते हैं। ये गीत न केवल मौखिक परंपरा का हिस्सा हैं, बल्कि ग्रामीण सामाजिक संरचना, उत्सवों, अनुष्ठानों और श्रमजीवन की सहज अभिव्यक्ति भी प्रस्तुत करते हैं। समय के साथ आधुनिकता, तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण ने लोकगीतों के स्वरूप, लोकप्रियता और पीढ़ियों के बीच इनके प्रसार पर स्पष्ट प्रभाव डाला है। इससे जहाँ इनकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता पुनर्परिभाषित हुई है, वहीं इनके विलुप्त होने का खतरा भी बढ़ा है। इस अध्ययन का उद्देश्य हिंदी लोकगीतों की परंपरा, सामाजिक महत्व और सांस्कृतिक परिचय में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है, साथ ही संरक्षण हेतु अपनाई जा रही समकालीन रणनीतियों का मूल्यांकन करना भी है। शोध से ज्ञात होता है कि डिजिटल आर्काइव, ऑडियो–वीडियो रिकॉर्डिंग, शैक्षणिक संस्थानों की पहल, सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन तथा सरकारी–गैर सरकारी प्रयास लोकगीतों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामुदायिक भागीदारी, लोककलाकारों को आर्थिक–सामाजिक प्रोत्साहन और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में लोकसंगीत का समावेश इन गीतों को पुनर्जीवित करने की संभावनाएँ बढ़ाता है। अतः यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक का संतुलित समागम हिंदी लोकगीतों को भविष्य में सुरक्षित, सशक्त और जीवंत बनाए रखने में सहायक होगा।

Keywords:- लोकगीत, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक प्रासंगिकता, संरक्षण, मौखिक परंपरा

परिचय

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

हिंदी लोकगीत भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की आत्मा का वह जीवंत रूप हैं, जो न केवल समाज के इतिहास, भावनाओं और आचार–विचारों को अभिव्यक्त करते हैं बल्कि सामूहिक जीवन के विविध रूपों को भी सहेज कर रखते हैं। ये मौखिक परंपरा से पीढ़ियों दर पीढ़ियों तक चले आए सांस्कृतिक दस्तावेज हैं, जिनमें ग्रामीण जीवन, प्रकृति, सामाजिक संरचना, लोक विश्वास, उत्सव, विवाह, कृषि, श्रम और मानवीय संवेदनाओं के विविध आयाम गहराई से प्रतिबिंबित होते हैं। हिंदी भाषी समाज में लोकगीतों की लोकप्रियता और उपयोगिता किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, मगही से लेकर राजस्थानी और हरियाणवी लोकधाराओं तक व्यापक रूप में विस्तृत है। समय के साथ-साथ बदलते सामाजिक–सांस्कृतिक ढाँचों, तकनीकी परिवर्तनों और वैश्वीकरण ने इस मौखिक विरासत के स्वरूप, प्रस्तुति और संरक्षण की चुनौतियों को और जटिल बना दिया है। ऐसे में हिंदी लोकगीत केवल गीत न रहकर एक सशक्त सांस्कृतिक पहचान, भावनात्मक एकता और सामुदायिक इतिहास के जीवंत प्रतीक के रूप में उभरते हैं।

आज के आधुनिक और डिजिटल युग में जहाँ एक ओर लोकगीतों का महत्व नए रूपों में पुनर्परिभाषित हो रहा है, वहीं दूसरी ओर इनके विलुप्त होने का खतरा भी तेजी से बढ़ रहा है। युवाओं में पश्चिमी संगीत की ओर झुकाव, पारंपरिक लोककलाकारों का घटता उत्साह, बाजारवाद, और लोकसंगीत में व्यावसायिकता की बाढ़ ने इन अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों को हाशिये पर पहुँचाया है। हालांकि, इसके समानांतर तकनीक-आधारित संरक्षण उपाय—जैसे डिजिटल आर्काइव, ऑडियो–वीडियो रिकॉर्डिंग, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म तथा शैक्षणिक संस्थानों द्वारा लोकगीतों के दस्तावेज़ीकरण—लोकगीतों के संरक्षण के नए अवसर प्रस्तुत करते हैं। सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं की पहल, लोककलाकारों को प्रशिक्षण, और सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अतः यह शोध हिंदी लोकगीतों की परंपरा, उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता तथा आधुनिक समय में अपनाई जा रही संरक्षण रणनीतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि इस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक किस प्रकार सुरक्षित और जीवंत रूप में पहुँचाया जा सकता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

हिंदी लोकगीतों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

हिंदी लोकगीतों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यंत व्यापक, बहुरंगी और हजारों वर्षों की मौखिक परंपरा से समृद्ध है। भारतीय उपमहाद्वीप के ग्रामीण जीवन, सामुदायिक अनुभवों, सामाजिक संबंधों और आध्यात्मिक विश्वासों ने इन लोकगीतों को आकार दिया है। वैदिक युग से ही सामूहिक गायन की परंपरा विद्यमान रही, जिसका विस्तार बाद के कालों में श्रमगीत, ऋतुगीत, पर्वगीत, विवाहगीत तथा देवी-देवताओं से संबंधित भजन-मंगलाचार के रूप में दिखाई देता है। हिंदी क्षेत्र में लोकगीतों का विकास सामाजिक संरचना, कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था, ग्रामीण संस्कृतियों और परिवार-केन्द्रित जीवनशैली से घनिष्ठ रूप से जुड़ा रहा। समय के साथ ब्रज, अवधी, बुंदेली, भोजपुरी, मगही, राजस्थानी और अन्य क्षेत्रीय बोलियों ने लोकगीतों को अपनी भाषिक शैली, भाव-व्यंजना और सांस्कृतिक विशिष्टताओं से समृद्ध किया। इन गीतों में प्रेम, विरह, आनंद, उत्सव, श्रम, संघर्ष, प्रकृति, अध्यात्म और स्त्री-अनुभवों का सजीव चित्रण मिलता है, जो सामान्य जन के जीवन को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। मध्यकाल में लोकगीत सामाजिक एकता, जनजागरण और धार्मिक आंदोलनों का भी साधन बने, जहाँ भक्ति आंदोलन ने इन्हें व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाया। आधुनिक युग में भी ये लोकगीत इतिहास, संस्कृति और परंपरा के जीवंत स्रोत बने हुए हैं, क्योंकि इनमें किसी समुदाय की सामूहिक स्मृति, रीति-रिवाज, विश्वास और मूल्य सुरक्षित रहते हैं। लोकगीतों के माध्यम से पीढ़ियाँ बिना लिखित साधनों के ज्ञान, नैतिकता, जीवन-शैली और सांस्कृतिक पहचान को आगे बढ़ाती रही हैं। ये गीत केवल कलात्मक कृतियाँ नहीं, बल्कि समाज के ऐतिहासिक विकास, सामाजिक संरचना, भावनात्मक संसार और सांस्कृतिक निरंतरता के दस्तावेज भी हैं। आज जब वैश्वीकरण और

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

तकनीकी परिवर्तन पारंपरिक संस्कृति को चुनौती देते हैं, तब हिंदी लोकगीत हमारे सांस्कृतिक मूल्यों, भाषाई विविधता और ऐतिहासिक धरोहर की रक्षा का जीवंत, प्रामाणिक और आवश्यक साधन के रूप में अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

लोकगीत का भाषिक एवं सांस्कृतिक अर्थ

लोकगीत का भाषिक एवं सांस्कृतिक अर्थ अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है, जो किसी समुदाय की भाषा, परंपरा, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक पहचान को सामूहिक रूप से प्रतिबिंबित करता है। भाषिक दृष्टि से लोकगीत लोकभाषा और बोलियों की स्वाभाविक, सहज और मौखिक अभिव्यक्ति है, जिसमें किसी क्षेत्र की भाषाई विशेषताएँ—उच्चारण, लय, छंद, स्थानीय शब्दावली, मुहावरे और लोक-रूपक—पूर्णता के साथ जीवंत होते हैं। यह किसी भी मानकीकृत या संस्कारित भाषा का रूप नहीं, बल्कि जनता की रोज़मर्रा की भाषा है, जो बिना कृत्रिमता के उनकी जीवन-शैली, भावनाएँ और अनुभवों को अभिव्यक्त करती है। इसी कारण लोकगीत भाषाई विविधता को सुरक्षित रखने का माध्यम बनते हैं और क्षेत्रीय संस्कृतियों को आपस में जोड़ते हुए सांस्कृतिक एकता में विशिष्टता जोड़ते हैं। सांस्कृतिक अर्थ में लोकगीत समाज की सामूहिक स्मृति, परंपरा और जीवन-मूल्यों का कलात्मक प्रतिबिंब हैं। इनमें मानव जीवन के जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कार, कृषि-आधारित जीवन, उत्सव-परंपराएँ, पर्व-त्योहार, प्रकृति के प्रति आस्था तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के सभी पहलू समाहित होते हैं। लोकगीत समाज के नैतिक मूल्यों, प्रेम-विरह, श्रम, संघर्ष, वीरता, भक्ति और स्त्री-अनुभवों का सजीव चित्रण करते हैं, जो इन्हें केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक शिक्षा और मूल्य-संवहन का माध्यम भी बनाते हैं। इनमें पीढ़ियों से चले आ रहे ज्ञान, व्यवहारिक अनुभव और विश्वास

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

संरक्षित रहते हैं, जो किसी समुदाय की पहचान को स्थिर और सुदृढ़ बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, लोकगीत सांस्कृतिक एकता और सामुदायिक बंधन को मजबूत करने का कार्य भी करते हैं, क्योंकि इन्हें सामूहिक रूप से गाया जाता है, जिससे सामाजिक सहभागिता और सामूहिक भावनाएँ विकसित होती हैं। विभिन्न अवसरों—विवाह, फसल कटाई, जन्म, पर्व, यात्राओं, धार्मिक अनुष्ठानों—पर गाए जाने वाले लोकगीत समाज की सांस्कृतिक निरंतरता को सुनिश्चित करते हैं। इस प्रकार, लोकगीत किसी भाषा की आत्मा और संस्कृति का धरोहर रूपी दर्पण हैं, जो उस समाज की संवेदनाओं, विश्वासों और परंपराओं को संरक्षित रखते हुए उनकी सांस्कृतिक पहचान की रक्षा करते हैं।

लोकगीतों की सामान्य परिभाषा

लोकगीत ऐसे गीत होते हैं जो आम लोगों द्वारा रचित होते हैं और जो पीढ़ी दर पीढ़ी संवाद का माध्यम बनकर समाज में प्रचलित होते हैं। ये गीत आम तौर पर अनौपचारिक होते हैं और किसी विशेष वर्ग या समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को प्रकट करते हैं। लोकगीतों में किसी भी प्रकार की शास्त्रीय या काव्यात्मक जटिलता की बजाय, सरलता और सहजता होती है, जो इन्हें जनमानस के बीच बहुत लोकप्रिय बनाती है। लोकगीतों के विषय सामान्यतः जीवन के विविध पहलुओं, जैसे प्रेम, विवाह, ऋतु परिवर्तन, कृषि कार्य, धार्मिक विश्वास और सामाजिक मुद्दों से संबंधित होते हैं। ये गीत न केवल लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं की अभिव्यक्ति होते हैं, बल्कि सामूहिक चेतना और समाज की सोच का भी प्रतिबिंब होते हैं। लोकगीतों की संगीत रचनाएँ सरल और लयबद्ध होती हैं, जिनमें आमतौर पर तात्कालिक भावनाओं का सहज रूप से प्रदर्शन किया जाता है। ये गीत खासतौर पर जन समुदाय की सामूहिक जीवनशैली, संघर्ष और परंपराओं को जीवित रखते

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

हैं। लोकगीतों की शाब्दिक संरचना आसान और याद रखने योग्य होती है, जिससे ये गीत आसानी से लोगों के बीच फैलते हैं। लोकगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व इसलिए भी है कि ये सिर्फ संगीत का रूप नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता और पहचान का प्रतीक भी होते हैं।

लोकगीत, लोककथा और लोकसाहित्य का आपसी संबंध

लोकगीत, लोककथा और लोकसाहित्य एक ही सांस्कृतिक परंपरा की परस्पर संबद्ध इकाइयाँ हैं, जो सामूहिक रूप से किसी समाज की ऐतिहासिक स्मृति, सामाजिक अनुभवों, मान्यताओं, मूल्यों और जीवन-शैली को संरक्षित एवं अभिव्यक्त करती हैं। लोकसाहित्य इन सभी का व्यापक छाता है, जिसके अंतर्गत लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, पहेलियाँ, लोकनृत्य, लोकनाट्य, मंगलाचरण और विविध मौखिक अभिव्यक्तियाँ शामिल हैं। लोकसाहित्य का मूल आधार "लोक" यानी जनता और उनकी सामूहिक रचनात्मकता है, जो पीढ़ियों से मौखिक परंपरा के माध्यम से संचित होती आई है। लोकगीत इस लोकसाहित्य का सबसे लयात्मक और काव्यात्मक रूप है, जिसमें लोकजीवन की भावनाएँ, श्रम-संस्कृति, प्रेम-विरह, उत्सव-पर्व, कृषक जीवन, स्त्री-अनुभव और सामाजिक संबंधों की सहज अभिव्यक्ति होती है। दूसरी ओर, लोककथा लोकसाहित्य की कथात्मक शैली है, जिसमें किसी समाज के ऐतिहासिक अनुभव, आदर्श, लोक-विश्वास, चमत्कारिक तत्व, नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक ज्ञान को कथा-रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लोकगीत जहाँ भावनात्मक और संगीतात्मक अभिव्यक्ति है, वहीं लोककथा कथानक आधारित सांस्कृतिक स्मृति का रूप है; दोनों मिलकर लोकसाहित्य की संपूर्णता को निर्मित करते हैं। इन तीनों के बीच संबंध इतना गहरा है कि कई लोकगीतों में लोककथाओं की घटनाएँ, पात्र और प्रसंग गूँजते

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

हैं, जबकि अनेक लोककथाओं में गीतों का सम्मिलित प्रयोग देखने को मिलता है। इसी प्रकार लोकसाहित्य इन दोनों रूपों को एक व्यापक सांस्कृतिक ढाँचे में जोड़ता है, जिसमें समाज की सामूहिक चेतना, जीवन-पद्धति और प्रतीक-विश्व सुरक्षित होता है। लोकगीत और लोककथा दोनों ही सामाजिक मूल्य और परंपराएँ आगे बढ़ाते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि लोकसाहित्य की मूलधारा जनता के अनुभवों पर आधारित है, न कि किसी विशेष लेखक की रचना पर। मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक साझेदारी, सामूहिक सृजन, सरल भाषा, क्षेत्रीयता और समय के साथ अनवरत परिवर्तित होते रहने की क्षमता इन तीनों तत्वों को एक-दूसरे से गहराई से जोड़ती है। इस प्रकार, लोकगीत, लोककथा और लोकसाहित्य परस्पर पूरक हैं, जो मिलकर किसी समाज की सांस्कृतिक विरासत, भाषाई विविधता और सामाजिक पहचान का सशक्त आधार बनाते हैं।

साहित्य की समीक्षा

सिंह, आर. (2010). भारतीय लोकगीतों की परंपरा देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और सामूहिक चेतना का सजीव प्रतीक है। ये गीत समाज की परंपराओं, आस्थाओं, रीति-रिवाजों और जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं। मौखिक परंपरा के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी गाए जाने वाले ये लोकगीत भारतीय जनजीवन की आत्मा हैं। इनमें विवाह, जन्म, त्योहार, ऋतुएँ, कृषि, भक्ति और वीरता जैसे विविध विषय समाहित हैं, जो क्षेत्रीय विविधताओं को दर्शाते हैं। हिंदी क्षेत्र के सोहर, कजरी, चैती, आल्हा और भक्ति गीत इस समृद्ध लोकधारा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

शर्मा, पी. (2011). लोकगीत किसी भी समाज की सांस्कृतिक अस्मिता और सामूहिक चेतना के प्रतिबिंब स्वरूप माने जाते हैं। ये गीत उस समाज के रीति-रिवाजों, मान्यताओं और जीवन-दर्शन को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत करते हैं। इनमें मानव जीवन के विविध अनुभव—आनंद, दुख, प्रेम, भक्ति, श्रम, संघर्ष और प्रकृति के प्रति संवेदना—प्राकृतिक रूप से व्यक्त होते हैं। भारतीय जनजीवन में लोकगीतों का प्रयोग जन्म, विवाह, त्यौहार, ऋतु परिवर्तन, कृषि कार्य और धार्मिक आयोजनों के अवसर पर किया जाता रहा है। ये गीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति के वाहक और सामाजिक एकता के सूत्र हैं।

गुप्ता, एस. (2012). हिन्दी लोकगीतों में समाज की सामूहिक चेतना, परंपराओं और जीवन मूल्यों का सशक्त और जीवंत प्रतिबिंब देखने को मिलता है। ये गीत केवल लोकजीवन के रीति-रिवाजों या सांस्कृतिक परंपराओं का वर्णन नहीं करते, बल्कि सामाजिक एकता, समानता, प्रेम, साहस और आध्यात्मिक चिंतन का गहरा संदेश भी संप्रेषित करते हैं। ग्रामीण जीवन में प्रचलित सोहर, विवाह गीत, कजरी, चैती और आल्हा जैसे लोकगीत जनजीवन के विविध अनुभवों और मानवीय संबंधों को प्रकट करते हैं। इनमें परिवार, समुदाय और प्रकृति के प्रति गहरे भावनात्मक जुड़ाव की अनुभूति मिलती है।

वर्मा, के. (2013). लोकगीतों का संरक्षण वर्तमान युग की एक महत्वपूर्ण और जटिल चुनौती बन गया है। आधुनिकता, शहरी जीवनशैली और पाश्चात्य प्रभावों के कारण यह प्राचीन परंपरा धीरे-धीरे विलुप्ति की ओर बढ़ रही है। मौखिक परंपरा पर आधारित लोकगीतों से जुड़े पारंपरिक गायक और कलाकार लगातार कम होते जा रहे हैं, वहीं नई पीढ़ी में इनकी प्रति रुचि घटती जा रही है। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

लगभग समाप्त हो चुका है, जिससे लोकसंगीत की मूल स्वर-लय और आत्मीयता भी प्रभावित हो रही है। क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में रचे गए इन गीतों का व्यवस्थित अभिलेखन और दस्तावेजीकरण न होने के कारण इनकी मौलिकता और विविधता लुप्त होने के खतरे में है।

हिंदी लोकगीतों का वर्गीकरण

हिंदी लोकगीतों का वर्गीकरण उनकी विषयवस्तु, सामाजिक उपयोग, सांस्कृतिक प्रसंग, भावनात्मक प्रकृति और सामुदायिक संदर्भ के आधार पर किया जाता है, जो हिंदी भाषी समाज की बहुआयामी जीवन-पद्धति को स्पष्ट करता है। ये लोकगीत केवल मनोरंजन या कला-रूप नहीं, बल्कि विशिष्ट सांस्कृतिक उद्देश्यों से जुड़े जीवंत दस्तावेज़ हैं। व्यापक रूप से हिंदी लोकगीतों को पाँच प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: धार्मिक/आध्यात्मिक लोकगीत, सामाजिक एवं पारिवारिक लोकगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत और पर्वगीत, वीर-गाथात्मक एवं ऐतिहासिक लोकगीत, और स्त्री-केन्द्रित लोकगीत, जिनमें प्रत्येक श्रेणी लोकजीवन के किसी विशिष्ट पक्ष को प्रतिनिधित्व करती है।

1. धार्मिक/आध्यात्मिक लोकगीत (देवी-देवता, भजन, मंगल गीत)

धार्मिक और आध्यात्मिक लोकगीतों में देवी-देवताओं की स्तुति, पौराणिक कथाओं के प्रसंग, गाँव-समाज की आस्थाएँ और लोकविश्वास प्रतिबिंबित होते हैं। देवी गीत, काली-भजन, राम-कीर्तन, कृष्ण-भजन, विरहिणी मीरा-गीत, सावन-भजन, छठ-गीत, कजरी आदि इसमें शामिल हैं। मंगल गीत विशेष रूप से शुभ कार्यों—जैसे विवाह, जन्म, गृहप्रवेश—के

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अवसर पर गाए जाते हैं, जिनमें मंगलकामना, आशीष और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है। ये गीत सामाजिक एकता और धार्मिक आस्था के वाहक हैं।

2. सामाजिक एवं पारिवारिक लोकगीत (विवाह, जन्म, संस्कार)

इस श्रेणी के लोकगीत मानव जीवन के विभिन्न संस्कारों—जन्म, नामकरण, अन्नप्राशन, विवाह, गृहस्थ जीवन और सामाजिक संबंधों—को दर्शाते हैं। विशेषतः विवाह गीत जैसे—सुआ गीत, मायरा गीत, विदाई गीत, बन्ना-बन्नी गीत—अत्यंत लोकप्रिय हैं। जन्म से जुड़े सोहर, जच्चा-बच्चा गीत, प्रसूति परंपरा के गीत परिवारिक भावनाओं, मातृत्व और हर्षोल्लास को व्यक्त करते हैं। ये गीत सामाजिक संरचना, पारिवारिक संबंधों और सामुदायिक भूमिकाओं को स्पष्ट करते हैं।

3. श्रमगीत, ऋतुगीत, पर्वगीत

श्रमगीत श्रम करते समय सामूहिक रूप से गाए जाते हैं, जैसे खेतिहर काम, नाव चलाना, फसल कटाई, गोबर पाथना आदि कार्यों के दौरान। इनसे श्रमिकों में ऊर्जा, एकता और उत्साह का संचार होता है। ऋतुगीत—जैसे फाल्गुनी गीत, सावनी गीत, पनघट गीत—प्रकृति, मौसम और कृषक जीवन के भावनात्मक संबंध को दर्शाते हैं। पर्वगीत विशेष त्योहारों जैसे होली, तीज, छठ, दिवाली, करवा चौथ आदि के अवसर पर गाए जाते हैं और सामूहिक उत्सवधर्मिता का प्रतीक हैं।

4. वीर-गाथात्मक एवं ऐतिहासिक लोकगीत

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

इन गीतों में ऐतिहासिक घटनाएँ, वीर योद्धाओं के साहसिक कार्य, सामाजिक संघर्ष और सामूहिक स्मृति से जुड़ी कथाएँ दर्शाई जाती हैं। आल्हा-ऊदल, ढोला-मारू, जोधा-अकबर, रानी पद्मिनी, महाराणा प्रताप, झांसी की रानी आदि पर आधारित अनेक लोकगीत हिंदी क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। ये गीत न केवल मनोरंजन करते हैं, बल्कि इतिहास की मौखिक परंपरा और सामुदायिक गौरव को जीवित रखते हैं।

5. स्त्री-केन्द्रित लोकगीत (सिंगार, बिरहा, विदाई)

स्त्रियों के अनुभव, भावनाएँ और जीवन-संघर्ष हिंदी लोकगीत परंपरा के सबसे मार्मिक और सशक्त हिस्से हैं। सिंगार गीत स्त्री के अलंकरण, सौंदर्य, भावनात्मक तैयारी और जीवन-आनंद को व्यक्त करते हैं। बिरहा गीत विरह, प्रतीक्षा, प्रेम-वेदना, दांपत्य संबंधों और सामाजिक सीमाओं के प्रभाव को उजागर करते हैं। विदाई गीत विवाह के समय माँ-बेटी के भावनात्मक बंधन और सामाजिक संरचना की भावनात्मक जटिलताओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। इन गीतों में स्त्री की भूमिका, पीड़ा, जिम्मेदारी और सांस्कृतिक स्थान का गहरा चित्रण मिलता है।

इस प्रकार, हिंदी लोकगीतों का वर्गीकरण लोकजीवन के विविध अनुभवों—धार्मिक आस्था, पारिवारिक संरचना, श्रम-संस्कृति, इतिहास, प्रकृति और स्त्री-अनुभव—को समग्रता में अभिव्यक्त करता है।

निष्कर्ष

हिंदी लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक विकास, सामाजिक संरचना और भावनात्मक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। इनका स्वरूप केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं,

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

बल्कि सामूहिक स्मृति, परंपरा और लोकमानस का जीवंत दस्तावेज़ है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लोकगीतों में निहित जीवन-मूल्य, सामुदायिक एकता, प्रकृति के साथ संतुलन, सामाजिक संबंधों की सहजता और सांस्कृतिक विविधता भारतीय समाज की वास्तविक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। हालांकि, आज के वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और आधुनिकता के दबावों ने इन पारंपरिक गीतों के अस्तित्व को चुनौती दी है। युवा पीढ़ी में पारंपरिक सांस्कृतिक अभिरुचि का कम होना, लोककलाकारों के सामने आर्थिक कठिनाइयाँ, और मीडिया के बदलते रुझान लोकगीतों के संरक्षण के लिए बाधा बनते हैं। इसके बावजूद, यह तथ्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि बदलते समय के साथ इन गीतों की नई पुनर्व्याख्या और आधुनिक संदर्भों में उनकी पुनर्प्रासंगिकता का उज्ज्वल मार्ग भी खुल रहा है।

संरक्षण रणनीतियों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि यदि डिजिटल संसाधनों, शैक्षणिक पाठ्यक्रमों, सांस्कृतिक संस्थानों, सरकारी नीतियों और सामुदायिक भागीदारी को समन्वित रूप से अपनाया जाए, तो हिंदी लोकगीतों की परंपरा को पुनर्जीवित किया जा सकता है। डिजिटल आर्काइव, ऑडियो–वीडियो दस्तावेज़ीकरण, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और संगीत महोत्सवों ने लोकसंगीत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने की मजबूत संभावनाएँ खोली हैं। वहीं, लोककलाकारों का प्रशिक्षण, आर्थिक प्रोत्साहन और सामाजिक सम्मान इस विरासत को जीवित बनाए रखने की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि संरक्षण की रणनीतियाँ केवल परंपरा को सुरक्षित रखने तक सीमित न रहें, बल्कि लोकगीतों को आधुनिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ते हुए उन्हें समाज की निरंतर evolving सांस्कृतिक पहचान का गतिशील हिस्सा बनाया जाए। इस प्रकार, हिंदी लोकगीतों की सांस्कृतिक विरासत न केवल सुरक्षित रह सकती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए गर्व, प्रेरणा और सांस्कृतिक आत्मबोध का स्रोत भी बन सकती है।

संदर्भ

1. दत्त, रामनारायण. (2015). भारतीय लोकसंगीत का सांस्कृतिक अध्ययन. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
2. शर्मा, कुसुम. (2018). हिंदी लोकगीत और सामाजिक जीवन. वाराणसी: साहित्य भवन।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

3. मिश्र, हरिनारायण. (2014). लोकगीत: स्वरूप, संवेदना और सांस्कृतिक दृष्टि. इलाहाबाद: संवाद प्रकाशन।
4. तिवारी, माधव. (2019). हिंदी क्षेत्र के लोकगीतों में सांस्कृतिक बिंब. लखनऊ: संस्कृति प्रकाशन।
5. पांडेय, शैलजा. (2017). ग्रामीण लोकपरंपराएँ और हिंदी लोकगीत. भारतीय लोकसाहित्य जर्नल, 12(2), 44–58।
6. सिंह, ममता. (2020). डिजिटल युग में लोकगीत संरक्षण: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. भारतीय संगीत शोध पत्रिका, 15(3), 66–78।
7. जोशी, राजीव. (2013). सामाजिक एकीकरण में लोकसंगीत की भूमिका. भारतीय सामाजिक नृविज्ञान समीक्षा, 7(4), 44–59।
8. चौहान, अर्चना. (2019). आदिवासी एवं ग्रामीण लोकपरंपराओं का दस्तावेज़ीकरण: संरक्षण की दिशा में पहल. लोकधरोहर अध्ययन, 11(2), 29–41।
9. यादव, प्रीति. (2018). भोजपुरी लोकगीतों में सांस्कृतिक पहचान. लोकसंस्कृति शोध पत्रिका, 5(1), 87–98।
10. शर्मा, देवेश. (2016). उत्तर भारत के लोकगीतों में सामाजिक संरचना का चित्रण. लोकवार्ता, 9(1), 101–118।
11. गुप्ता, संजय. (2021). भारतीय लोकसंगीत में मौखिक परंपरा की भूमिका. लोकसांस्कृतिक विमर्श, 6(2), 55–71।
12. शुक्ला, नीलम. (2022). समुदाय आधारित संरक्षण मॉडल और भारतीय लोकगीत. एशियाई सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 14(3), 72–85।